BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# जनजातीय क्षेत्र जौनसार–बाबर में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन

आशा
सहायक प्राध्यापिका
शिक्षाशास्त्र विभाग
सरदार महिपाल राजेंद्र जनजातीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय साहिया, देहरादून उत्तराखंड
प्रदीप कुमार
सहायक प्राध्यापक
समाजशास्त्र विभाग
सरदार महिपाल राजेंद्र जनजातीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय साहिया, देहरादून उत्तराखंड

**सारांशः**

यह शोध उत्तराखंड के जौनसार–बावर क्षेत्र की महिलाओं की शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करता है। क्षेत्र की पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पारंपरिक सोच, और सीमित संसाधनों के कारण महिलाएं शिक्षा और सशक्तिकरण से वंचित रही हैं। शिक्षा को महिला सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम मानते हुए, अध्ययन में यह पाया गया कि सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएं, आर्थिक असमानता, स्कूलों की दूरी और जागरूकता की कमी प्रमुख अवरोध हैं। 'खुमरी' जैसी पारंपरिक व्यवस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी नगण्य है। शोध में यह निष्कर्ष निकला कि केवल सरकारी योजनाओं से बदलाव संभव नहीं, बल्कि समाज की मानसिकता, नीति–निर्माण और जमीनी क्रियान्वयन में व्यापक सुधार आवश्यक है। शिक्षा, जागरूकता, संसाधनों की उपलब्धता और महिला नेतृत्व की भागीदारी से ही जनजातीय महिलाओं का समग्र सशक्तिकरण संभव है।

**शब्द कुंजीः** पितृसत्तात्मक व्यवस्था, महिला शिक्षा, खुमरी, भूमि अधिकार, सामाजिक सांस्कृतिक बाध्यताएं

**प्रस्तावनाः**

भारतीय समाज की संरचना विविधतापूर्ण और बहुस्तरीय है, जहाँ विभिन्न सामाजिक वर्गों, जातियों, जनजातियों और समुदायों की महिलाएं भिन्न–भिन्न सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करती हैं। विशेष रूप से अनुसूचित जनजातियों की महिलाएं सामाजिक रूप से पिछड़ी, आर्थिक रूप से निर्भर और शैक्षिक रूप से वंचित रहती हैं। इनकी स्थिति को समझे बिना समावेशी विकास की परिकल्पना अधूरी मानी जाती है।

शिक्षा, जिसे अधिकार, स्वतंत्रता और सशक्तिकरण का मूल माध्यम माना जाता है, महिलाओं के लिए परिवर्तन की धुरी बन सकती है। यह न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है, बल्कि उन्हें अपने जीवन के प्रति निर्णय लेने की क्षमता भी प्रदान करती है। शिक्षा महिलाओं को पारंपरिक बंधनों से मुक्त कर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सक्षम बनाती है।

उत्तराखंड राज्य के देहरादून जनपद में स्थित जौनसार–बाबर क्षेत्र एक विशिष्ट जनजातीय भू–भाग है, जहाँ की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था आज भी परंपरागत और पितृसत्तात्मक मान्यताओं से संचालित होती है। इस क्षेत्र की महिलाओं को आज भी सामाजिक असमानता, भूमि स्वामित्व से वंचितता, शिक्षा की कमी, और निर्णय प्रक्रिया में निष्क्रियता जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यद्यपि यह क्षेत्र आधिकारिक रूप से अनुसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित है, परंतु आधुनिक विकास के कई लाभ अब भी यहाँ की महिलाओं तक नहीं पहुँच सके हैं।


@2025 Bihar Shodh Samaagam

यह क्षेत्र भौगोलिक रूप से कठिन, सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट और आर्थिक रूप से सीमित संसाधनों वाला है। बालिका शिक्षा की स्थिति अत्यंत कमजोर है। विद्यालयों की भौगोलिक दूरी, उपयुक्त शिक्षण संस्थानों की कमी, महिला शिक्षकों का अभाव, पारंपरिक मानसिकता, और सामाजिक व धार्मिक मान्यताएँ बालिकाओं की शिक्षा में बड़ी बाधाएं हैं।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध जनजातीय क्षेत्र जौनसार–बाबर में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन इस बात का गहन विश्लेषण करता है कि शिक्षा किस प्रकार जौनसार–बाबर क्षेत्र की महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त बना सकती है। यह अध्ययन इस क्षेत्र की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, शिक्षा में बाधा बनने वाले कारकों, और सशक्तिकरण की संभावनाओं का द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से समीक्षात्मक मूल्यांकन करता है।

शोध इस तथ्य को रेखांकित करता है कि जौनसार–बाबर की महिलाएं अत्यंत मेहनती, सहनशील और परिवार व कृषि कार्यों में बराबर की भागीदार हैं, परंतु उन्हें अधिकार, संपत्ति और निर्णयों में भागीदारी जैसे मूल अधिकार अब भी प्राप्त नहीं हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पारंपरिक 'खुमरी' राजनीतिक प्रणाली और भूमि अधिकारों से वंचितता जैसे कारकों ने महिलाओं की स्थिति को और भी जटिल बना दिया है।

इस अध्ययन का उद्देश्य न केवल इन समस्याओं की पहचान करना है, बल्कि यह भी है कि शिक्षा किस प्रकार एक सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में कार्य कर सकती है। यह शोध इस दिशा में कार्यरत सरकारी योजनाओं, सामाजिक संगठनों और स्थानीय प्रयासों का भी समीक्षात्मक विश्लेषण करता है और यह समझने की कोशिश करता है कि किन नीतिगत और सामाजिक हस्तक्षेपों के माध्यम से इस क्षेत्र की महिलाओं को मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

इस शोध की प्रासंगिकता इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह जौनसार–बाबर जैसे अपेक्षाकृत कम अध्ययन किए गए क्षेत्र पर केंद्रित है, जहाँ शिक्षा और महिला सशक्तिकरण को लेकर नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता अधिक है।

अतः यह प्रस्तावना इस शोध की रूपरेखा को प्रस्तुत करती है, जिसमें शिक्षा को एक सामाजिक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में समझने और महिलाओं के सशक्तिकरण में इसकी भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। यह अध्ययन जौनसार–बाबर की महिलाओं की यथार्थ स्थिति को उजागर कर, नीति निर्धारकों, समाजशास्त्रियों और विकास योजनाकारों को समाधानोन्मुखी दिशा प्रदान करने का प्रयास करता है।

**महिला सशक्तिकरण और समाज में उनकी भूमिका:**

किसी भी समाज का समग्र विकास उसकी सामाजिक संरचनाओं और संस्थाओं पर निर्भर करता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि समाज के विभिन्न समुदाय और उनसे संबंधित व्यक्तियों की सामाजिक संरचनाओं में क्या भूमिका है। परंपरागत रूप से मानव समाज मुख्य रूप से दो प्रमुख पक्षों – स्त्री और पुरुष – में विभाजित रहा है। समाज में पुरुषप्रधानता का प्रभाव हमेशा से रहा है, जिसके कारण पुरुषों की भूमिका को अधिक महत्व दिया गया है, जबकि महिलाओं की भूमिका की उपेक्षा की गई है।

किसी भी समाज के विकास के लिए आवश्यक है कि पुरुष और महिला दोनों पक्षों का समान रूप से विकास हो। इसके बावजूद आज भी महिलाओं की स्थिति आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्रों में पिछड़ी हुई है, विशेषकर ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में। यह सच है कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेक प्रयास और योजनाएँ शुरू की गई हैं, परंतु अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाए हैं।

इस स्थिति के पीछे मुख्य कारण यह है कि महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को केवल शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, रोजगार जैसे सीमित क्षेत्रों तक ही सीमित समझा गया है। इसके बजाय महिला सशक्तिकरण के नए आयामों, दृष्टिकोणों तथा

उन बाधाओं का भी अध्ययन आवश्यक है, जो संस्कृति, सामाजिक प्रतिमान और रीति–रिवाजों के नाम पर छिपी हुई हैं और जिन पर अभी तक पर्याप्त शोध नहीं हुआ है।

अतः जब महिला विकास और सशक्तिकरण का अध्ययन एक नई और समग्र अवधारणा के तहत किया जाएगा, तभी हम महिलाओं की वास्तविक सामाजिक स्थिति, उनकी भूमिका और समाज में उनके योगदान को सही अर्थों में समझ पाएंगे। यह समझ न केवल महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक होगी, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

**शोध प्रश्नः**

1. जौनसार–बावर क्षेत्र में महिलाओं की वर्तमान शैक्षिक स्थिति क्या है?
2. महिलाओं की शिक्षा में कौन–कौन से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारक बाधक के रूप में कार्य करते हैं?
3. महिलाएं शिक्षा प्राप्ति के लिए किन–किन संघर्षों का सामना करती हैं?
4. महिलाओं के शैक्षिक विकास में कौन–कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ सामने आती हैं और उनके समाधान क्या हो सकते हैं?
5. महिला सशक्तिकरण की राह में कौन–कौन सी सामाजिक एवं संरचनात्मक बाधाएं मौजूद हैं?
6. जनजातीय समाज में महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है?
7. शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की क्या संभावनाएं हैं?

**शोध उद्देश्यः**

1. जौनसार–बावर क्षेत्र में महिलाओं की वर्तमान शैक्षिक स्थिति का सम्यक् विश्लेषण करना।
2. महिलाओं की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारकों की पहचान करना।
3. शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की संभावनाओं का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक मूल्यांकन करना।
4. जनजातीय समाज में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता एवं उसकी वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

**साहित्य समीक्षाः**

जौनसार–बावर, उत्तराखंड के देहरादून जिले का एक जनजातीय क्षेत्र है, जहां की महिलाएं पारंपरिक रूप से घरेलू कार्यों और खेतिहर मजदूरी में लगी हुई हैं। जौनसार–बावर की महिलाओं की स्थिति पर कई शोध किए गए हैं, जो समाज की संरचनात्मक और सांस्कृतिक जटिलताओं को उजागर करते हैं। इन महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक जिम्मेदार हैं, जिनकी पहचान और विश्लेषण इस शोध का मुख्य उद्देश्य है शैक्षिक स्थिति और सुधार के प्रयास जौनसार–बावर में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में पिछले कुछ दशकों में सुधार देखा गया है, हालांकि यह सुधार राज्य और राष्ट्रीय औसत से काफी धीमा रहा है। 2013 में किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि क्षेत्र में शिक्षा के निम्न स्तर को कई कारक प्रभावित करते हैं, जैसे सामाजिक और सांस्कृतिक अवरोध, धार्मिक अंधविश्वास, आर्थिक चुनौतियां, और शैक्षिक संसाधनों की कमी। इसके बावजूद सरकारी प्रयासों के बावजूद, जागरुकता की कमी और संसाधनों की अपर्याप्तता से ड्रॉप आउट दर में कोई खास कमी नहीं आई है। यही कारण है कि जौनसार–बावर क्षेत्र में शिक्षा में सुधार के प्रयासों के बावजूद साक्षरता दर अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच सकी है।

**महिलाओं की भूमिका और कार्यभार**

जौनसार–बावर की महिलाएं अत्यंत परिश्रमी, सहनशील, संवेदनशील और अपने कार्य के प्रति समर्पित होती हैं। क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में उनका योगदान महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके बिना कोई कार्य संभव नहीं हो सकता है। उनका दिनभर का समय खेतों और घर के कामों में व्यतीत होता है, और फिर भी उन्हें सामाजिक और शैक्षिक अधिकारों में बराबरी का स्थान प्राप्त नहीं है। विशेष रूप से पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर कार्य का बोझ कहीं अधिक होता है, जैसा कि एच.जी. वाल्टन (1910) ने अपने गढ़वाल हिमालय के गजेटियर में उल्लेख किया है। उनके अनुसार गढ़वाल के ग्रामीण इलाकों में महिलाएं खेती के लगभग सभी कार्य करती हैं, लेकिन उन्हें पुरुषों के समान सम्मान प्राप्त नहीं है।

### पितृसत्तात्मक व्यवस्था और महिला अधिकार

जौनसार–बावर की समाज व्यवस्था पितृसत्तात्मक है जिसका प्रभाव महिलाओं की भूमि पर हिस्सेदारी में साफ देखा जाता है। महिलाएं न तो पिता की पैतृक संपत्ति में हिस्सेदार होती हैं और न ही पति की संपत्ति में। स्थिति का अन्दाजा आप इसी से लगा सकते हैं कि डॉ. राजकुमारी उत्तराखंड राज्य आंदोलन में महिलाओं के भूमिका नामक अपनी पुस्तक में वर्णन करती है कि जौनसार क्षेत्र से प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र गढ़ वैराट के संपादक बारु सिंह चौहान कहते हैं कि जौनसार–बावर के प्रसिद्ध गांव क्वानू के वरिष्ठ समाजसेवी श्री रतन सिंह चौहान ने ऐसी ही एक सकारात्मक पहल की थी। उन्होंने अपनी पैतृक सम्पति में से अपनी सुपुत्री श्री मती विमला देवी के नाम 15 बीघा जमीन कर दी थी। परन्तु आज भी उस जमीन पर विवाद चल रहा है। ठीक इसी प्रकार का एक दूसरा प्रकरण जौनसार बावर के प्रसिद्ध गाँव नगऊ का है जहाँ खत के सदर स्याना श्री परम सिंह ने अपनी दो पुत्रियों के नाम अपनी पैतृक संपत्ति का कुछ हिस्सा लगाया था परन्तु इसमें भी मामला न्यायालय में विचाराधीन है। हालांकि प्रेम से वशीभूत होकर पिता द्वारा अथवा पुत्री द्वारा स्वयं जमीन में हिस्सेदारी की सकारात्मक पहल की गई परन्तु परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज ने उसको स्वीकृति नहीं दी। अतः ये इस बात का द्योतक है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था में अपनी जड़ें इस कदर जमा ली है जिसे बदलने में सदियों लग जाएंगे। ।

### महिलाओं के शैक्षिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए सरकारी प्रयास

सरकार ने जनजातीय क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाओं की शुरुआत की है, लेकिन इन प्रयासों का जमीनी स्तर पर असर अपेक्षाकृत कम रहा है। डॉ.दिनेश चंद बलूनी (2020) ने अपनी पुस्तक जनपद देहरादून इतिहास और समाज में जौनसारी जनजाति की महिलाओं की स्थिति पर विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए सरकारी प्रयासों की आवश्यकता है, लेकिन अभी भी महिलाओं को अपनी बुनियादी जरूरतों, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और जल आपूर्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

### सामाजिक अवरोध और जागरूकता की कमी

सामाजिक और सांस्कृतिक अवरोधों के कारण महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करना एक कठिन कार्य बन जाता है। महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव है, और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण उन्हें परिवार और समाज में सीमित अधिकार मिलते हैं। इसके परिणामस्वरूप महिलाएं कृषि कार्यों में अधिक व्यस्त होती हैं और शैक्षिक अवसरों से वंचित रह जाती हैं। हेमा उनियाल (2018) ने अपनी पुस्तक जौनसार बावर रवाई में इस सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट किया है, जिसमें उन्होंने जौनसार–बावर की महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण किया है। जौनसार–बावर क्षेत्र की महिलाओं की स्थिति समाज की संरचनात्मक और सांस्कृतिक जटिलताओं का परिणाम है। इन महिलाओं की शिक्षा, भूमि पर हिस्सेदारी और सामाजिक सशक्तिकरण के संदर्भ में कई सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अवरोध मौजूद हैं। हालांकि सरकार और समाज के कुछ हिस्सों द्वारा सकारात्मक प्रयास किए गए हैं, लेकिन पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सामाजिक

बंधनों के कारण महिलाओं को समान अधिकार और अवसर नहीं मिल पा रहे हैं। इस शोध में इन विभिन्न कारकों का गहराई से विश्लेषण किया जाएगा, ताकि जौनसार–बावर क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए व्यावहारिक समाधान और नीति सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

### शिक्षा संस्थानों की अनुपलब्धता, और सरकारी प्रयासों के प्रति जागरूकता की कमी

महिलाओं की स्थिति को एक वाक्य में इस प्रकार संक्षेपित किया जा सकता है जौनसार–बावर की नारी मेहनती, सहनशील, संवेदनशील और समर्पित होते हुए भी सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से वंचित है। महिला की दैनिक दिनचर्या और पारिवारिक भूमिका यहां की महिलाएं प्रातः अंधेरे में उठकर पनघट से पानी लाना, अनाज कूटना, जंगल से लकड़ी या घास लाना, खेतों में काम करना – इन सब में व्यस्त रहती हैं। एच. जी. वाल्टन (1910) ने गढ़वाल हिमालय का गजेटियर में लिखा है कि गढ़वाल की महिलाएं एक खेतिहर मजदूर से अधिक नहीं समझी जाती हैं। 1901 की जनगणना के अनुसार, कुल 809 पुरुष खेतिहर मजदूरों के मुकाबले महिला मजदूरों की संख्या 1101 थी, जो उनके परिश्रम की पुष्टि करता है।

### शिक्षा और सामाजिक स्थिति

डॉ. बबीता सहोत्रा (2022) ने लिखा है कि उत्तराखंड के अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों में महिलाएं निर्णय प्रक्रिया से लगभग पूर्णतः बाहर हैं। पढ़ी–लिखी लड़कियाँ भी सामाजिक असहमति के कारण नौकरी नहीं कर पातीं। राज्य गठन के बाद भी बुनियादी सुविधाएं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, अस्पताल, आदि के लिए महिलाओं को आज भी संघर्ष करना पड़ता है। प्रसव के दौरान भी उन्हें न तो पर्याप्त भोजन मिल पाता है और न ही विश्राम का अवसर ।

### राजनीतिक व्यवस्था खुमरी और महिलाओं की अनुपस्थिति

जौनसार–बावर की पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्था को खुमरी कहा जाता है, जिसमें केवल पुरुषों का वर्चस्व होता है। ये स्याने या बुजुर्ग पुरुष पंचायतों में निर्णय लेते हैं और यह संस्था स्थानीय स्तर पर सामाजिक न्याय और प्रशासन का संचालन करती है। हालांकि, इस प्रणाली में महिलाओं की कोई भूमिका नहीं है। वे न तो खुमरी की बैठकों में भाग लेती हैं और न ही अपने हितों की सीधी अभिव्यक्ति कर सकती हैं। डॉ. बबीता सहोत्रा (2022) का कहना है कि यह प्रणाली महिलाओं के सशक्तिकरण की सबसे बड़ी बाधा बन गई है। यह विरोधाभास इस तथ्य से और गहरा हो जाता है कि संविधान में महिला आरक्षण की व्यवस्था होने के बावजूद, खुमरी जैसी परंपरागत सत्ता संरचनाएं आज भी महिलाओं को बाहर रखती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब तक परंपरागत व्यवस्थाओं में परिवर्तन नहीं होता, तब तक महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण अधूरा रहेगा।

### जौनसार–बावर संक्षिप्त परिचयः

### भौगोलिक स्थिति

जौनसार–बावर उत्तराखंड के देहरादून जनपद के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित जनजातीय क्षेत्र है। इसके उत्तर व पश्चिम में हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जिला, पूर्व में मसूरी और टिहरी गढ़वाल तथा दक्षिण में विकासनगर और कालसी स्थित हैं। प्रमुख नदियाँ टोंस, यमुना और आसन हैं।

### जनजातीय पहचान एवं प्रशासन

यह क्षेत्र भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित है। इसमें मुख्यतः दो उप–क्षेत्र आते हैं, जौनसार (मैदानी एवं उपरी इलाके) तथा बावर (टोंस नदी के ऊपरी और दुर्गम पर्वतीय इलाके)। प्रशासनिक रूप से यह चकराता, कालसी और त्यूनी ब्लॉकों में विभाजित है।

### सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताएँ

जौनसार–बावर की समाज व्यवस्था पितृसत्तात्मक है और पारंपरिक ग्राम पंचायत प्रणाली (खुमरी) अपनाई जाती है। यहाँ लोक देवी–देवताओं की पूजा, पशु बलि, और सामूहिक त्योहारों की परंपराएँ प्रचलित हैं। विवाह व्यवस्था में बहुपतित्व के प्राचीन प्रभाव आज भी कुछ जगहों पर देखे जा सकते हैं।

### आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति

आर्थिक गतिविधियाँ मुख्यतः कृषि, पशुपालन, बागवानी और सरकारी/सेना सेवाओं तक सीमित हैं। महिलाओं की भूमिका घरेलू, कृषि और बाह्य कार्यों में प्रमुख है। शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं की सहभागिता कम है, जिसमें स्कूलों की दूरी, संसाधनों की कमी और सामाजिक बाधाएँ मुख्य कारण हैं। ड्रॉप आउट दर अधिक और उच्च शिक्षा में भागीदारी न्यून है।

### अनुसंधान पद्धतिः

### शोध का स्वरूप

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें जौनसार–बावर क्षेत्र की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, सामाजिक भूमिका और सशक्तिकरण से जुड़े विभिन्न पहलुओं का द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

### आंकड़ों का प्रकारः

इस शोध में मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। इनमें वे आंकड़े एवं जानकारियाँ सम्मिलित हैं जो पूर्व में सरकारी संस्थाओं, अनुसंधानों, पुस्तकों, जनगणनाओं, रिपोर्टों तथा संबंधित साहित्य में प्रकाशित हैं।

### आंकड़ों के स्रोतः

### (क) सरकारी दस्तावेज़ एवं रिपोर्ट

जनगणना रिपोर्ट (Census of India – 2001, 2011)

1. उत्तराखण्ड सरकार की शिक्षा एवं महिला कल्याण संबंधी रिपोर्ट
2. योजना आयोग, नीति आयोग एवं मानव संसाधन मंत्रालय की रिपोर्टें

### (ख) शैक्षणिक पुस्तकें एवं शोध पत्र

एच. जी. वाल्टन गढ़वाल हिमालय का गजेटियर (1910)

हेमा उनियाल जौनसार–बावर रवाई जौनपुर (2018)

डॉ. बबीता सहोत्रा उत्तराखण्ड में वंचित वर्ग और उनकी राजनीतिक भागीदारी (2022)

डॉ. दिनेश चन्द्र बलूनी जनपद देहरादूनरू इतिहास और समाज (2020)

कुमारी, सारथी महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका (2020), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एकेडमिक स्टडीज़

सुमन, नितेश कुमार एवं डॉ. प्रकाश आदित्य आदिवासी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (2023), जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन

कपिल, डॉ. देव भारत में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण (2017), जे. ई. टी. आई. आर.

कुमारी, डॉ. वीणा महिला सशक्तिकरणरू एक समीक्षा (2018), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च

### (ग) पत्र–पत्रिकाएँ एवं स्थानीय स्रोत

स्थानीय समाचार पत्र  गढ़ वैराट (जौनसार–बावर आधारित साप्ताहिक)

समाजसेवियों और संगठनों के साक्षात्कार आधारित लेख

### (घ) अन्य स्रोत

शोध पत्रिकाएं

इंटरनेट आधारित विश्वसनीय स्रोत जैसे National Digital Library] SSRN] ResearchGate

**आंकड़ों का विश्लेषणः**

द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण विषयवस्तु विश्लेषण एवं तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति से किया गया है। इसमें विभिन्न समय काल, क्षेत्रों और सामाजिक वर्गों के बीच तुलना कर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

**क्षेत्र की सीमाः**

यह अध्ययन उत्तराखण्ड के जनजातीय क्षेत्र जौनसार–बावर तक सीमित है। विशेष रूप से इस क्षेत्र की महिलाओं की शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का द्वितीयक स्रोतों से विश्लेषण किया गया है।

**सीमाएँः**

1. यह अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों के अभाव में केवल द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।
2. आंकड़ों की अद्यतनता और विश्वसनीयता संबंधित स्रोतों की प्रामाणिकता पर निर्भर है।
3. स्थानीय भाषा एवं परंपराओं की गहराई से समझ सीमित हो सकती है क्योंकि उपलब्ध स्रोत मुख्यतः हिन्दी में हैं।

**जौनसार–बावर क्षेत्र में महिलाओं के शैक्षिक और सामाजिक सशक्तिकरण हेतु सुझावः**

**शैक्षिक जागरूकता अभियान**

जौनसार–बावर क्षेत्र में महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष अभियान चलाए जाएं ताकि समाज में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके।

**स्थानीय भाषा में शिक्षण**

मातृभाषा आधारित शिक्षा पद्धति को प्राथमिक स्तर पर अपनाया जाए ताकि आदिवासी बालिकाएं सरलता से सीख सकें और विद्यालय से जुड़ी रहें।

**महिला केंद्रित छात्रवृत्ति और सहायता योजनाएं**

आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लड़कियों को छात्रवृत्तियाँ, निःशुल्क किताबें और यूनिफार्म प्रदान की जाएं, जिससे वे शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित हों।

**खुमरी व्यवस्था में महिला भागीदारी**

पारंपरिक 'खुमरी' पंचायत प्रणाली में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाए ताकि निर्णय निर्माण प्रक्रिया में उनकी भी आवाज़ शामिल हो।

**महिलाओं को भूमि अधिकार**

महिलाओं को पैतृक और वैवाहिक संपत्ति में कानूनी तथा सामाजिक रूप से अधिकार मिलें, इसके लिए जनजागरूकता और नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

**स्वास्थ्य और प्रसव सुविधाओं का सुधार**

क्षेत्र में स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या और गुणवत्ता बढ़ाई जाए, विशेषकर गर्भावस्था और प्रसव से संबंधित सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए।

**महिला समूह और स्व–सहायता समितियों का सशक्तिकरण**

महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूह और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएं ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

**महिला शिक्षक भर्ती और शिक्षा केंद्र**

दूरदराज के गांवों में महिला शिक्षक नियुक्त कर महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाए।

**मीडिया और स्थानीय नेताओं की भूमिका**

स्थानीय नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और मीडिया को महिला शिक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में जनमत तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

**निष्कर्षः**

जौनसार–बावर जनजातीय क्षेत्र की महिलाएं सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से अनेक बाधाओं का सामना करती हैं, जिनमें पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ, दुर्गम भौगोलिक स्थितियाँ और सीमित संसाधन प्रमुख हैं। इन बाधाओं के कारण उनकी शिक्षा की स्थिति दयनीय है, जिससे उनका सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण भी प्रभावित होता है।

शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर, जागरूक और निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाने का सबसे प्रभावी माध्यम है। हालांकि क्षेत्र में सरकारी योजनाएँ मौजूद हैं, किन्तु उनका प्रभाव सामाजिक अवरोधों और जागरूकता की कमी के कारण सीमित है। 'खुमरी' जैसी पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्थाएं महिलाओं की भागीदारी को बाधित करती हैं।

इसलिए शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक संरचनाओं में भी सकारात्मक बदलाव आवश्यक हैं ताकि महिलाएं अपने अधिकारों और संसाधनों तक पहुंच सकें। बहुआयामी रणनीतियों, स्थानीय सहभागिता, जागरूकता अभियानों और समर्पित नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से ही जौनसार–बावर की महिलाएं सशक्त और मुख्यधारा का हिस्सा बन पाएंगी।

अतः यह शोध स्पष्ट करता है कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है, परन्तु शिक्षा अकेले पर्याप्त नहीं; सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर समन्वित प्रयासों की भी आवश्यकता है, तभी सतत और समावेशी विकास संभव होगा।

## सन्दर्भ सूची:


1. बलूनी, डॉ. दिनेश चन्द्र। (2020)। जनपद देहरादून इतिहास और समाज। समय साक्ष्य प्रकाशन।
2. कपिल, डॉ. देव। (2017)। भारत में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण। जे. ई. टी. आई. आर।
3. कुमारी, सारथी। (2020)। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एकेडमिक स्टडीज़।
4. कुमारी, डॉ. वीणा। (2018)। महिला सशक्तिकरणः एक समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च।
5. चौहान, डॉ. राजकुमारी। (2021) उत्तराखण्ड महिला भूमिका का इतिहास। समय साक्ष्य प्रकाशन।
6. रतूड़ी, पं. हरिकृष्ण। (2020)। गढ़वाल का इतिहास (डॉ. यशवंत सिंह कठोच, सम्पा.)। भागीरथी प्रकाशन।
7. सुमन, नितेश कुमार, एवं डॉ. प्रकाश आदित्य। (2023)। आदिवासी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन।
8. उनियाल, हेमा। (2018)। जौनसार बाबर रवाई जौनपुर। बिनसर पब्लिशिंग।
9. वाल्टन, एच. जी। (2005)। गढ़वाल हिमालय का गजेटियर। उत्तराखण्ड प्रकाशन।
10. विलियम्स, जी. आर. सी। (2021)। देहरादून का इतिहास (प्रकाश थपलियाल, अनुवाद)। उत्तराखण्ड प्रकाशन।